6

खोलने से पहले सोचो!

(मत्ती 5:33-37)

बाइबल अपनी जीभों की रखवाली के लिए यानी जो कुछ हम कहते हैं, उसमें सावधान रहने की ताड़नाओं से भरी पड़ी है। नीतिवचन की पुस्तक में सुलैमान ने कहा, ''जो अपने मुंह की चौकसी करता है, वह अपने प्राण की रक्षा करता है, परन्तु जो गाल बजाता उसका विनाश हो जाता है'' (13:3); ''क्या तू बातें करने में उतावली करने वाले मनुष्य को देखता है? उस से अधिक तो मूर्ख ही से आशा है'' (29:20)। याकूब ने जीभ की विनाशकारी शक्ति के प्रभाव का यह सजीव चित्रण लिखा है:

> देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, ... और भवचक्र में आग लगा देती है और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है (याकूब 3:5ख, 6)।

पिछले पाठ में हमने जाना था कि ''जो कोई अपने भाई पर क्रोध करे, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहे वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा। और जो कोई *कहे* 'अरे मूर्ख!' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा'' (मत्ती 5:22)। इस पाठ के लिए वचन पूरी तरह से उन बातों पर केन्द्रित है, जो हमारे मुंह से निकलती हैं।

कोई चकित हो सकता है कि बाइबल हमारे बोलचाल पर इतना ज़ोर क्यों देती है। मैं किसी के यह कहने की कल्पना कर सकता हूं, ''संसार की इतनी बड़ी-बड़ी समस्याएं हैं जिनको सुलझाने की आवश्यकता है *बोलने* जैसी छोटी बात पर चर्चा करने में समय बेकार क्यों गवाएं?'' हमारे अधिकतर पाठक समझते हैं कि बड़ी समस्याओं को आमतौर पर शब्दों के समझदारी से इस्तेमाल के बिना कभी सुलझाया नहीं जा सकता। परन्तु बोलने के ढंग पर चर्चा मसीही व्यक्ति के लिए दोगुनी महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि उसकी बातचीत में प्रभु के प्रति उसका समर्पण दिखाई नहीं देता तो वह कभी ''पृथ्वी का नमक'' और ''जगत की ज्योति'' (मत्ती 5:13, 14) नहीं बन सकता। मैंने इस पाठ का शीर्षक ''खोलने से पहले सोचो!'' रखा है यानी अपना *मुंह* खोलने से पहले सोच लो।

वचन

उन्होंने क्या सुना था

अपने अध्ययन का आरम्भ हम वचन पाठ, मत्ती 5:33-37 की समीक्षा से करते हैं। ये आयतें उससे भिन्न हैं। ये आयतें उसमें जो यीशु ने सिखाया और जो यहूदियों ने सुना हुआ था

अन्तर करती हैं। इस वचन का आरम्भ होता है, ''फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, झूठी शपथ न खाना'' (आयत 33क)। KJV में ''तू शपथ न खाना'' है। ''शपथ'' का संकेत झूठी कसम खाना है। यीशु ने उसी से आगे कहा, जो उन्होंने सुना हुआ था: ''परन्तु [तुम] प्रभु के लिए अपनी शपथ को पूरी करना'' (आयत 33ख)। KJV में ''पर अपनी शपथ को प्रभु के लिए पूरी करना'' है।

जिस शिक्षा की यीशु बात कर रहा था, वह पुराने नियम का एक-एक शब्द दोहराना नहीं था, बल्कि पुराने नियम की कई बातों की समीक्षा थी। इसके दो नमूने हैं:

> कि जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने, वा अपने आप को वाचा से बान्धने के लिए शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुंह से निकला हो, उसके अनुसार वह करे (गिनती 30:2)।

> जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए मन्नत माने, तो उसके पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा (व्यवस्थाविवरण 23:21; देखें आयतें 22, 23)।

शपथ पूरी करने के निर्देश दस आज्ञाओं की तीसरी आज्ञा से बहुत मिलते थे: ''तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना'' (निर्गमन 20:7क)। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में परमेश्वर ने घोषणा की, ''तुम मेरे नाम की झूठी शपथ खा के अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न ठहराना; मैं यहोवा हूं'' (19:12)। नौंवी आज्ञा के शब्दों की झलक भी हो सकती है: ''तू ... झूठी साक्षी न देना'' (निर्गमन 20:16)।

ध्यान दें कि गिनती 30:2 में ''मन्नत'' और ''शपथ'' दोनों का उल्लेख है। आमतौर पर हम मन्नत ''सच्चा वायदा जो किसी को किसी विशेष कार्य से बांधता है'' जबकि शपथ को परमेश्वर ''गवाह''[1] के रूप में पुकारना मानते हैं कि जो कुछ वह व्यक्ति कह रहा है वह सच है।[2] परन्तु ''शपथ और मन्नत में आमतौर पर अर्थ स्पष्ट नहीं होता था।''[3] मत्ती 5:33 में NASB में अंग्रेज़ी शब्द ''vows'' (मन्नतें) इस्तेमाल किया गया है जबकि 34 से 36 आयतों में इसका इस्तेमाल ''oath'' (शपथ) हुआ है।[4] इस पाठ में हम इन शब्दों का इस्तेमाल अदल-बदल कर करेंगे। मूसा की व्यवस्था बेतुकी शपथों, प्रभु के नाम का लापरवाही से इस्तेमाल, [और] टूटी हुई मन्नतों की मनाही करती थी।[5]

जो यीशु ने कहा

शपथ खाने पर पुराने नियम की शिक्षा को संक्षिप्त करने के बाद, यीशु ने कहा:

> परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है, न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की,[6] क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है (मत्ती 5:34-36)।

यीशु के शब्दों को समझने के लिए आपको पहली सदी की यहूदी प्रथा से अवगत होना

पड़ेगा। यहूदी गुरुओं ने एक विस्तृत प्रबन्ध बना लिया था कि किसकी शपथ माननी है और किसकी नहीं। मत्ती 23 अध्याय में शास्त्रियों और फरीसियों को कड़ी डांट में यीशु ने ऐसे तर्कों की बात की:

> हे अंधे अगुवो, तुम पर हाय! जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा। हे मूर्खो, और अन्धो, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है? फिर कहते हो, कि यदि कोई बेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उस की शपथ खाए तो बन्ध जाएगा। हे अन्धो, कौन बड़ा है भेंट या वेदी: जिस से भेंट पवित्र होती है? इस लिए जो बेदी की शपथ खाता है वह उस की, और जो कुछ उस पर है, उस की भी शपथ खाता है। और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उस की और उस में रहने वाले की भी शपथ खाता है। और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है (आयतें 16-22)।

शपथों के बारे में एक मुख्य अन्तर यह था कि उससे परमेश्वर के नाम को लिया जाता है या नहीं। यहूदी रब्बी यह बताते थे कि परमेश्वर के नाम का इस्तेमाल होने पर मन्नत को पूरा करना आवश्यक है; परन्तु यदि उसके नाम का इस्तेमाल न किया जाए तो मन्नत को मानना आवश्यक नहीं होगा। परिणाम यह हुआ कि वे स्वर्ग की, पृथ्वी की, यरूशलेम नगर की और यहां तक कि अपने सिर की (यानी अपने जीवन की[7]) शपथ खाने से भी हिचकिचाते नहीं थे। उनका कहना था कि ऐसी शपथ को पूरा करना आवश्यक नहीं है। मुझे बचपन की एक बात याद आती है। अपने मन में मैं दो बच्चों के बीच हुई इस बातचीत को सुन सकता हूं:

''तुम ने कहा था कि तुम इसे करोगे!''
''पर मेरी उंगलियां फंस गई थीं।''
''मैंने कोई उंगली फंसी नहीं देखी।''
''हां मैंने उन्हें अपनी पीठ पीछे पकड़ रखा था।''

बच्चों में आमतौर पर यह माना जाता था कि यदि अंगूठे के साथ वाली उंगली और बीच वाली उंगली फंस जाए, तो वह जो चाहे कह सकता है और इसके लिए उसे ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाता।[8] यह सोच मूर्खता लगती है पर यहूदियों की इस बात से बड़ी मूर्खता नहीं कि परमेश्वर का नाम लिए बिना खाई जाने वाली शपथ को मानना आवश्यक नहीं है।

कई अपने सिरों को हिलाते हुए यह सोच रहे हो सकते हैं, ''लोग इतने मूर्ख कैसे हो सकते हैं?'' आप हम ऐसे बेतुके अन्तर नहीं करते। आपको पता है कि हम नहीं करते? सच्चाई बताने के सम्बन्ध में, बहुतों का मानना है कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अलग-अलग नियम हैं। उनका कहना है कि वे ईमानदार होने में यकीन रखते हैं, पर उन्हें लगता है कि ऐसी कोई परिस्थिति नहीं है जिसमें कारोबार में, राजनीति में या दूसरे देशों से व्यवहार करने में झूठ बोलना बड़ी बात नहीं है।

यीशु के समय में यहूदियों द्वारा किए जाने वाले अन्तरों में उसने कहा कि उनके द्वारा शपथ

खाई जाने वाली किसी बात को परमेश्वर से अलग नहीं किया जा सकता। स्वर्ग उसका सिंहासन है, और पृथ्वी उसके पैरों की चौकी है (देखें यशायाह 66:1)। यीशु के समय में यरूशलेम उसका विशेष नगर,[9] यानी वह स्थान था, जहां उसका मन्दिर था। सिर तक भी तो परमेश्वर का ही बनाया हुआ था, और ''इसका हर बाल उसकी कारीगरी की छाप है।''[10]

कोई चकित हो सकता है कि ''तू एक बाल को भी न उजला न काला कर सकता है'' शब्दों का क्या अर्थ है, जबकि कुछ लोग अपने बाल ब्लीच (इसे हल्का बनाने के लिए) या डाई (उन्हें काले बनाने के लिए) कर लेते हैं। ब्रिटिश रेडियो कार्यक्रम के अनुसार बालों को डाई करना या रंग करना ''चार हज़ार से अधिक वर्ष से'' प्रचलित है।[11] यीशु बालों के *प्राकृतिक रंग* की बात कर रहा था। जैसे-जैसे मैं बूढ़ा होता हूं, मेरे सिर के बालों का रंग पका ही है पर मेरी भाभी के बाल जवानी में ही सफेद हो गए थे। हम में से किसी का इस पर कोई नियन्त्रण नहीं है। यीशु के कहने का अर्थ था कि अपने सिर के छोटे से छोटे बाल सहित व्यक्ति जीवन में हर चीज़ के सृष्टिकर्त्ता से अलग नहीं हो सकता। इसलिए यह सोचना मूर्खता है कि परमेश्वर का नाम लेकर की जाने वाली शपथ तो माननी आवश्यक है पर परमेश्वर की सृष्टि के किसी भाग का नाम लेकर ली गई शपथ को मानना आवश्यक नहीं है।

यह तय करने की कोशिश करने के बजाय कि कौन सी शपथ माननी आवश्यक है और कौन सी नहीं, यीशु ने कहा, ''शपथ खाना ही नहीं।'' परन्तु उसने कहा, ''तुम्हारी बात 'हां' की 'हां,' या 'नहीं' की 'नहीं' हो'' (मत्ती 5:37क)। ''हां'' या ''नहीं'' को दोहराने का अर्थ यह हो सकता है कि जब तुम ''हां'' या ''नहीं'' कहते हो तो यह दोहराते हुए शब्दों पर ज़ोर देने के साथ हो।[12] सम्भवतया इसका अर्थ यह है कि जब तुम ''हां'' कहते हो तो इसका *अर्थ* ''हां'' ही होना चाहिए, और जब तुम न कहते हो तो इसका अर्थ ''नहीं'' ही होना चाहिए। शपथ के साथ अपने शब्दों पर ज़ोर देना अनावश्यक होना चाहिए। याकूब ने अपनी पत्री में इससे मिलती जुलती बात कही: ''पर हे मेरे भाइयो, सबसे श्रेष्ठ बात वह है, कि शपथ न खाना; न स्वर्ग की, न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की, पर तुम्हारी बातचीत हां की हां, और नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य न ठहरो'' (याकूब 5:12)।

''जो कुछ इससे अधिक होता है,'' यीशु ने कहा कि ''वह बुराई से होता है'' (मत्ती 5:37ख)। अनुवादित शब्द ''बुराई'' (*poneros*) का अर्थ ''बुरा'' *व्यक्ति* यानी (शैतान) या ''बुरी *बात*'' (जैसे बुरा मन) हो सकता है। पहाड़ी उपदेश में हमें यही अस्पष्टता दो बार और मिलती है (5:39; 6:13) परन्तु इससे इतना फर्क नहीं पड़ता कि हम अपने वचन पाठ में इसे क्या अर्थ दें। दोनों मामलों में ओछी शपथ *का स्रोत* बुराई ही है। इसके अलावा एक अभिप्राय यह भी हो सकता है कि शपथ और मन्नत के आवश्यक होने का एक ही कारण हो कि हम बुरे संसार में रहते हैं, जहां झूठ पाया जाता है।

शिक्षा

जो यीशु नहीं सिखा रहा था।

अब जबकि हम ने वचन की समीक्षा कर ली है, तो अगला प्रश्न है कि ''यीशु ने जो कुछ

कहा उसका क्या *अर्थ* था?'' पहले चर्चा करते हैं कि यीशु क्या *नहीं* सिखा रहा था।

कइयों ने यीशु के शब्दों का अर्थ यह लिखा है कि मसीही व्यक्ति को कभी मन्नत या शपथ खाकर कोई बात नहीं कहनी चाहिए। कुछ गुटों में यह विश्वास की बात है और कुछ मसीही लोगों में यह व्यक्तिगत विवेक की बात है। मुख्य ध्यान देने वाली बात अदालत में शपथ खाना है। यदि मत्ती 5:33-37 को ही लिया जाए, तो निश्चित रूप में यह, यह सिखाती लगती है कि परमेश्वर के बालक को अदालत में शपथ नहीं खानी चाहिए। यदि आप मानते हैं कि यीशु यही सिखा रहा था तो अपने कामों को उस विश्वास से मिलाएं और अपने विवेक की बात को न टालें।[13] अन्य देशों का तो मुझे मालूम नहीं, पर अमेरिका की अदालतों में उन लोगों के लिए जो गवाही देने से पहले विवेकपूर्ण ढंग से औपचारिक शपथ नहीं ले सकते, उपाय किया जाता है। उन्हें ''झूठी शपथ खाने के दण्ड के अधीन पुष्टि करते हुए'' यह कहने की अनुमति होती है कि वे सच ही बोलेंगे।[14]

परन्तु मैं यह सुझाव देता हूं कि यीशु के मन में यह बात नहीं थी। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने लिखा है कि हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचना होगा कि ''जब हम अधिकारात्मक उदाहरणों के प्रकाश में मनाही की व्याख्या करते हैं।''[15] ''अधिकारात्मक उदाहरण क्या हैं?'' परमेश्वर के उदाहरण से ही आरम्भ करते हैं। इब्रानियों के लेखक ने परमेश्वर के शपथ खाने को शपथ के साथ दो बार बताया:

> और परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा देते समय जब कि शपथ खाने के लिए किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा। कि मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूंगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊंगा (इब्रानियों 6:13, 14)।

> (... वे [लैव्यव्यवस्था की याजकाई वाले] ... बिना शपथ याजक ठहराए गए पर यह शपथ के साथ उसकी ओर से नियुक्त किया गया जिसने उसके विषय में कहा,
>
> कि प्रभु ने शपथ खाई,
> और वह उससे फिर न पछताएगा,
> कि तू [यानी यीशु] युगानुयुग याजक है) (इब्रानियों 7:21)।

फिर यीशु का उदाहरण है। जब महासभा के सामने उसकी पेशी हुई, तो प्रधान याजक ने उससे कहा, ''मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे'' (मत्ती 26:63)। अनुवादित शब्द ''शपथ देता हूं'' (*exorkizo*) का अर्थ ''शपथ दिलाकर विनती करना'' है।[16] NIV में है ''मैं तुझे शपथ दिलाता हूं।'' शपथ की गम्भीरता पर ध्यान दें कि यह ''जीवते परमेश्वर की'' थी। यदि यीशु शपथ के अधीन होने में विश्वास न रखता होता, तो वह खामोश रह सकता था, पर वह खामोश नहीं रहा। उसने उत्तर दिया, ''तू ने आप ही कह दिया'' (आयत 64), जो कि पुष्टि करने के ढंग में उत्तर है। NIV में है ''हां,'' बिल्कुल ऐसे ही है।

हमारे पास पौलुस का उदाहरण भी है, जो आमतौर पर अपनी बात की सच्चाई के गवाह के रूप में परमेश्वर को पुकारता है। उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 1:8 में उसने कहा, ''इसमें

परमेश्वर मेरा गवाह है, कि मैं मसीह यीशु की सी प्रीति करके तुम सब की लालसा करता हूं'' (रोमियों 1:9; गलातियों 1:20; 2 कुरिन्थियों 1:23 भी देखें)। इन उदाहरणों से हम निष्कर्ष निकालते हैं कि ये ऐसे अवसर थे जब मन्नत मानना या शपथ लेना उपयुक्त होता है।

यीशु जो सिखा रहा *था*

यदि हमारे वचन पाठ का उद्देश्य पूरी तरह से मन्नतों और शपथों से रोकना नहीं है तो इसका लक्ष्य क्या है? अपनी बातों से यीशु हमें क्या सिखाना चाहता था। मत्ती 5:33–37 से कई नियम बनाए जा सकते हैं।[17] आइए तीन पर विचार करते हैं:

(1) *ओछी शपथों से बचो।* हमारा वचन पाठ सिखाता है कि हमें ओछी[18] शपथों से यानी ऐसी बातों से जिसमें परमेश्वर के नाम का और परमेश्वर से जुड़ी बातों का इस्तेमाल हो, बचना चाहिए, जैसे इन उदाहरणों में है:[19]

- ''परमेश्वर की ...।''
- ''स्वर्ग की ...।''
- ''सब पवित्र बातों की ...।''

ओछी शपथें न केवल गलत बल्कि बेकार भी हैं। यदि आप उनका इस्तेमाल किए बिना किसी पर विश्वास नहीं कर सकते, तो उनका इस्तेमाल करने पर भी उसका विश्वास नहीं कर सकते। किसी ने कहा है, ''बिना शपथ के ईमानदार आदमी पर यकीन किया जाता है, पर बेईमान आदमी पर हज़ार शपथ खाने के बावजूद यकीन नहीं किया जाता।''

ओछी शपथों से बहुत नज़दीकी से जुड़ी परमेश्वर के नाम और अन्य बातों का उसकी निन्दा के रूप में इस्तेमाल है। जहां मैं रहता हूं वहां निम्न अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल आम होता है:

- कोई रोमांचित होते हुए कहता है, ''ओ, माई गॉड!''
- कोई किसी दूसरे पर क्रोधित होते हुए कहता है, ''ओ, तुम्हें क्या लगता है कि परमेश्वर के नाम पर तुम क्या कर रहे हो?''
- कोई चिन्तित होते हुए कहता है, ''केवल परमेश्वर ही जानता है [या ऊपर वाला ही जानता है] कि मैं इसमें से कैसे निकल रहा हूं।''[20]

और उदाहरण दिए जा सकते हैं, जैसे चिल्लाहट के रूप में यीशु के नाम का इस्तेमाल करना।[21] एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है कि ''झूठी शपथ खाने वाले के द्वारा की गई बात से भयानक कोई अपराध नहीं है।'' फिर उसने कहा:

> ... संसार में उसके धीरज का कारण इस बात से बड़ा नहीं है कि परमेश्वर झूठी शपथ खाने वाले को बदला देने और तुरन्त नरक में मारने के लिए उठता नहीं है। सचमुच ऐसे संसार में, जहां हर दिन, हर घड़ी और हर पल हज़ारों लोगों द्वारा उसके नाम को अपवित्र किया जाता है, परमेश्वर दिखाता है कि वह क्रोध करने में धीमा है और यह कि उसकी दया की कोई सीमा नहीं है।[22]

(2) *सच्चे व्यक्ति बनें।* थोड़ी देर पहले मैंने संकेत दिया था कि ईमानदार व्यक्ति को शपथ की आवश्यकता नहीं होती। अपने वचन पाठ से हम दूसरा सबक यह लेते हैं कि हम में से हर किसी को ईमानदार होने, यानी ऐसा व्यक्ति होना आवश्यक है जिसे अपनी बात मनवाने के लिए शपथ की आवश्यकता नहीं।

एक लड़का अपने छोटे भाई को समझा रहा था कि अपने माता-पिता के जवाब की व्याख्या कैसे करनी है। उसने कहा, ''यदि वे 'हां' कहते हैं तो इसका अर्थ है 'हो सकता है।' यदि वे कहें 'मैं सोचूंगा,' तो इसका अर्थ है 'नहीं।' यदि वे कहें 'नहीं' तो इसका अर्थ है कि जो तुम्हें चाहिए जब तक उसे दो बार नहीं कहते वह नहीं मिलेगा।'' उम्मीद है कि लड़के का मूल्यांकन गलत था। यदि वह सही था तो उसके माता-पिता ने हमारे वचन पाठ में से मुख्य सबक नहीं सीखा था कि ''जो तुम्हारे कहने का अर्थ है वही कहो और जो कहते हो उसका अर्थ वही हो।''

आपको और मुझे उस छोटे लड़के के माता-पिता जैसा नहीं बनना है।[23] जब हम ''हां'' कहते हैं तो इसका अर्थ ''हां'' ही होना चाहिए। जब हम ''नहीं'' कहते हैं तो इसका अर्थ ''नहीं'' ही होना चाहिए। हमें सच्चे लोग बनना चाहिए। ''इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (इफिसियों 4:25)।

जब मैं लड़का था तो हम ''वह अपनी बात का पक्का है और उसकी बात उसकी पहचान है'' जैसी अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करते थे जिसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति सच बोलता है। अधिकतर सौदे कांपते हाथों के साथ हुए। हम आज एक अलग संसार में रहते हैं, उस संसार में जो उस भाषा से भरे कानूनी समझौतों और अनुबंधों में डूब रहा है जिसे केवल वकील ही समझ सकते हैं। जब लोग और बेईमान और चिड़चिड़े हो जाते हैं, तो स्थिति बिगड़ जाती है। वर्षों पहले जब मैंने अपना पहला घर खरीदा था, तो कानूनी दस्तावेज़ केवल कुछ पन्नों के होते थे। चार साल पहले जब मैंने वर्तमान घर खरीदा तो लगभग एक इंच मोटाई जितने दस्तावेज़ों का गठ्ठा लगा।

आपको और मुझे देश के कानून को मानना आवश्यक है (रोमियों 13:1), सो हम अपने सौदों के लिए कानूनी अनिवार्यताओं से बच नहीं सकते। तौभी व्यक्तिगत स्तर पर हम में से हर किसी को ईमानदार बनने और सच बोलने के लिए नाम बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।[24]

(3) *अपनी बात पर पक्के रहें।* पिछले पाठ से बिल्कुल जुड़ी यह बात है कि बात के पक्के रहें। शायद यह केवल मेरी कल्पना है, पर मुझे लगता है कि अधिक से अधिक लोग अपनी बात पर पूरे नहीं उतर रहे हैं। स्पष्टतया काफ़ी लोगों ने यह फैसला ले लिया है कि यदि कोई उन से कोई चीज़ मांगता है तो उससे पीछा छुड़ाने का आसान तरीका उसे देने का वायदा करना है। वे कहते हैं, ''पक्का, मैं देख लूंगा'' और आमतौर पर उन से अन्तिम शब्द यही सुनने को मिलता है। वे वायदे करने में जिन्हें पूरा करने की उनकी कोई मंशा नहीं है सोचते नहीं लगते।

विवाह के समारोह के दौरान की जाने वाली प्रतिज्ञाओं पर मैं एक बात कहना चाहता हूं।[25] सुझाव दिया गया है कि विवाह पर पिछली आयतों (मत्ती 5:31, 32) और विचाराधीन ''हां/नहीं'' वाली आयतों में ''एक स्वाभाविक सम्पर्क'' है।[26] विवाह के समारोहों के दौरान ली गई शपथें अलग-अलग हो सकती हैं; पर उन में ''बीमारी और तन्दुरुस्ती में,'' ''सब को छोड़कर,'' और ''जब तक दोनों जिन्दा रहें'' जैसे शब्द होते ही हैं। इन वायदों को करने वाले लोगों को

अपनी बात की समझ होती है? क्या उनके कहने का अर्थ वही है जो वे कहते हैं। जब वे कहते हैं ''हां,'' तो क्या उनके कहने का अर्थ यह होता है कि ''हां, जब तक वह मुझे खुश रखे''? क्या उनकी ''हां'' का अर्थ ''हां'' होता है या इसका अर्थ ''शायद'' होता है?

कई साल पहले मैं उन युवा दम्पत्तियों के तलाक की संख्या से परेशान हो गया, ये वे दम्पत्ति थे, जिनके निकाह मैंने पढ़े थे। मैंने एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया जिसमें मुझे उम्मीद थी कि मैं उस संख्या को कम कर दूंगा। मुझे निकाह से पहले विस्तार से काउंसिलिंग और पूछताछ कर लेनी आवश्यक है। एक विशेष आवश्यकता यह थी कि उन में से हर एक यह कहते हुए कि यदि उन्हें कोई मुश्किल आती है, तो वे तलाक के वकील के पास जाने से पहले मेरे पास आएंगे, एक समझौते पर हस्ताक्षर करने थे। मुझे निराशा हुई कि मेरी चौकसी काम नहीं आई। उन में से कइयों ने इसके बावजूद तलाक के लिए सलाह ले ली। मैं इसे समझ नहीं पाया। मैंने अपनी पत्नी से कहा, ''पर उन्होंने *वचन दिया* था कि वे तलाक करवाने वाले वकील से मिलने से पहले मुझ से बात करेंगे! और उन्होंने की नहीं!'' अन्त में मुझे लगा कि यदि उन्हें परमेश्वर को दिए गए अपने वचन को तोड़ने से परेशानी नहीं है तो मेरे साथ किए गए वचन को तोड़ने से क्यों हिचकेंगे।

मैं पूरे ज़ोर के साथ यह आग्रह करना चाहता हूं कि आप बात के पक्के बनें। जब आप कोई चीज़ *कहते* हैं तो उसे *करने* को यकीनी बनाएं। आप पूछ सकते हैं, ''उस वचन को निभाने के लिए यदि *कीमत* चुकानी पड़े?'' जब आप कोई बात करने के लिए कहते हैं तो उसे *पूरा* करें चाहे उसके लिए जो भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े।

कई साल पहले मुझे एक भक्त मसीही के जनाजे के लिए भजन संहिता 15 में अच्छा वचन मिला था।[27] उस भक्त व्यक्ति का चित्रण करते हुए दाऊद ने आयत 4 में यह खूबी जोड़ी है: ''जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठानी पड़े।'' इसका अर्थ यह है कि जब परमेश्वर का भय मानने वाला कोई व्यक्ति उसे करने का वचन देता है तो वह उसे पूरा करता है चाहे इसके लिए उसे हानि ही उठानी पड़े। NIV में कहा गया है कि ''वह अपनी शपथ को पूरा करता है चाहे इससे उसे कष्ट ही हो।'' एक अनुवाद में यह जोड़ा गया है: ''वायदा निभाओ चाहे तुम्हें इसकी कीमत ही देनी पड़े।''[28] लैरी कैलविन ने इस नियम का एक महत्वपूर्ण उदाहरण दिया है:

> जब मैं लगभग सात वर्ष का था तो मेरे दादा के पास T मॉडल था जिसे वह बेच रहे थे। एक सुबह एक आदमी आकर मेरे दादा से कहने लगा कि वह उस पुरानी कार का 1,000 डॉलर देगा। मेरे दादा ने इस पर उस आदमी से हाथ मिला लिया। उस आदमी को तब तो समझ नहीं आया। उसने कहा, ''अगर ठीक है तो मैं इसे लेने थोड़ी देर बाद आ जाऊंगा।'' दादा ने कहा, ''अच्छा, ठीक है।''
>
> उस दोपहर बाद में एक और आदमी ने कार के लिए मेरे दादा को 2,500 डॉलर की पेशकश की। मैं इस बात को कभी नहीं भूलूंगा कि मेरे दादा ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगे और उस आदमी से कहा, ''काश तुम सुबह आ गए होते। मैं ज़रूर उन 2,500 डॉलरों को इस्तेमाल करता। परन्तु मैंने सुबह एक आदमी के साथ सौदा कर लिया है। मैंने 1,000 डॉलर में बेच दी है।''[29]

हां, मुझे मालूम है कि ऐसे अवसर आते हैं जब वचन निभाना असम्भव होता है। मैंने कहीं बोलने के लिए वचन दिया था और फिर बीमार हो गया जिस कारण उस वचन को पूरा नहीं कर पाया। एक पिता के रूप में मैंने बिना सोचे कुछ वायदे कर दिए और उन्हें निभा नहीं पाया। (उन अवसरों को याद करना परेशान करने वाला है।) परन्तु ऐसी घटनाएं नियम न होकर अपवाद होनी चाहिए। यदि हम यह या वह करने की बात करने से *पहले* कीमत पर विचार कर लें तो ऐसा बहुत कम या बिल्कुल नहीं होगा। मैं फिर से यह आग्रह करना चाहता हूं कि कम वचन दें और जो वचन दें उसे पूरा करें।

सारांश

कहते हैं कि ''हमारे समाज में निष्ठा का अकाल पड़ गया है।''[30] परमेश्वर की संतान को प्रवृत्ति को उलटने में अगुआ बनना चाहिए और उनके लिए यह आवश्यक है। यदि हम पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति बनना चाहते हैं तो हमें निष्ठावान लोग बनना आवश्यक है। यदि हम पुरुषों और स्त्रियों को प्रभु के पास लाने में सहायता करना चाहते हैं तो हमें निष्ठावान लोग होना आवश्यक है। दूसरे लोग यदि हमारे प्रतिदिन की बातों के करने पर जो हम कहते हैं उस पर विश्वास नहीं कर सकते तो वे अनन्त बातों को कहने पर हमारा विश्वास क्यों करें?

एक बार फिर, अपनी परख करने का समय है। शायद हम में से कइयों को चर्चा किए गए सभी विषयों जैसे ओछी शपथ लेने, परमेश्वर के नाम को बदनाम करने, सच्चाई न बता पाने और अपनी बात पर खरा न उतरने पर ''दोषी'' पाया जा सकता है। इन्हें अपने जीवनों में एक नया आरम्भ करने की आवश्यकता है। परमेश्वर की सहायता से उन्हें व्यवहार और कार्य में पूरी तरह बदलाव लाना आवश्यक है। परन्तु निश्चित तौर पर हम में से सभी लोग कुछ हद तक दोषी हैं। हमें चाहिए कि अपनी कमियों से मन फिराएं, परमेश्वर से क्षमा मांगें और भविष्य में बेहतर करने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगें। अपने मुंह को ''खोलने से पहले सोचने'' में परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

टिप्पणियां

[1]*दि अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण (2001) एस. वी. ''oath.'' [2]शपथ का अर्थ यह भी है कि परमेश्वर बात सही न होने पर शपथ खाने वाले को दण्ड दे सकता है। [3]आर. टी. फ्रांस, *दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1985), 124. [4]हमारे वचन पाठ में ''मन्नत'' और ''शपथ'' के लिए इस्तेमाल किए गए विभिन्न यूनानी शब्दों के लिए इस पाठ के अन्त में ''प्रचार करने और सिखाने के लिए नोट्स'' देखें। [5]डी. ए. कारसन, ''मैथ्यू,'' *द एक्सपोज़िटर'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 8 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: रीजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1984), 153. [6]यरूशलेम के अलावा और उदाहरण उपसर्ग *en* से पहले आते हैं जिसका अनुवाद ''की'' हुआ है। ''यरूशलेम'' शब्द से पहले *eis* है जिसका अनुवाद ''के प्रति'' हो सकता है। यहां यह इस तथ्य के लिए हो सकता है कि यहूदी लोग ''यरूशलेम *की*'' शपथ को न मानने वाली मानते थे जबकि उन्हें लगता था कि ''यरूशलेम *के प्रति*'' की गई शपथें पूरी की जानी आवश्यक हैं। [7]इसका अर्थ यह हो सकता है कि यदि वे कह देते कि यह सही नहीं है तो उन्हें अपने जीवन से हाथ धोना पड़ता। [8]संसार के कई भागों में उंगली के ऊपर उंगली चढ़ जाना अशुभ माना जाता है। इस अंधविश्वास के आरम्भ का पता नहीं है। [9]अब यह सच नहीं है (देखें यूहन्ना 4:20, 21), परन्तु यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के समय सच

था। [10]ए. लूकियन विलियम, ''सेंट मैथ्यू,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 15, संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एण्ड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 165.

[11]''दि हिस्ट्री ऑफ़ हेयर डाई'' (http://www.bbc.co.uk/radio4/womanshour/05/2006_31_tue.shtml; इंटरनेट; 30 May 2008 को देखा गया)। [12]यह भी सम्भव है कि यीशु ने शब्दों को केवल समझाने पर ज़ोर देने के लिए दोहराया। [13]रोमियों 14:23 टिप्पणियां, डेविड रोपर ''रोमियों, 5,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (हिन्दी अनुवाद) में देखें। [14]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन द गॉस्पल आफ़ मैथ्यू* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 67. [15]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1 मैथ्यू एण्ड मार्क (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, ऑरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 2006), 57. [16]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, विलियम व्हाइट, *जूनि., वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 13. [17]पाठ के बाद ''प्रचार करने और सिखाने के लिए नोट्स'' में और सुझाव दिए गए हैं। [18]इस वाक्य में ''ओछा'' का अर्थ है ''गम्भीरता से ध्यान दिए जाने के अयोग्य; मामूली'' (*दि अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्करण [2001], एस. वी. ''frivolous'')। [19]उपदेश के इस भाग में दिए गए मेरे उदाहरण व्यक्तिगत रूप में सुनी गई बातों पर आधारित हैं। जहां आप रहते हैं वहां के हिसाब से उदाहरणों को बदल लें। [20]मेरे कुछ उदाहरणों को कुछ परिस्थितियों में परमेश्वर के लिए सम्मान के साथ बताया जा सकता है। परन्तु उनका इस्तेमाल इतना अधिक हुआ है कि वे आम हो गए हैं। आमतौर पर उन्हें परमेश्वर के लिए कम या कोई विचार नहीं कहा जाता।

[21]''गोश'' और ''जीज़'' जैसे शब्द भी बताए जा सकते हैं। ये कोमल वचन या ''नज़ाकत से की गई शपथें'' पवित्र नामों का थोड़ा सा बदला हुआ संस्करण है (''गॉड'' के लिए ''गोश,'' ''जीज़स'' के लिए ''जीज़'') अधिकतर लोगों के लिए यह अहानिकर लगता है, पर मैंने बहुत पहले यह निर्णय लिया था कि मैं इनका इस्तेमाल नहीं करूंगा। [22]अल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: मैथ्यू एण्ड मार्क,* सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 58. [23]आप चाहें तो यह ध्यान दे सकते हैं कि हम में से अधिकतर ने सच्चाई घर में ही सीखी थी, हमारे माता-पिता के द्वारा शिक्षा और नमूना देने के द्वारा (इसके साथ सच न बोलने पर) हमें उपयुक्त दण्ड दिए जाने से। [24]उन कुछ लोगों के लिए जो दावा करते हैं कि वे ''हमेशा सच बोलते हैं'' जबकि वास्तव में वे आमतौर पर नीच और लापरवाह होते हैं, एक और शब्द जोड़ सकते हैं। सच्चाई *प्रेम से* बताई जानी आवश्यक थी (इफिसियों 4:15)। [25]यह भाग पश्चिमी जगत की स्थिति को दिखाता है। आप जहां भी रहते हैं, विवाह के अपने करार पर खरा उतरने की आवश्यकता पर ज़ोर देने का महत्व होगा। [26]लैरी कैल्विन, *द पावर ज़ोन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 84. [27]नीतिवचन 31 का अन्तिम भाग परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री का उत्कृष्ट चित्रण है। भजन संहिता 15 को परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति का चित्रण माना जा सकता है। [28]यूजीन एच. पीटरसन, *द मैसेज* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), ६६३. [29]कैल्विन, 89. [30]वही, 91.